रामदरश मिश्र के उपन्यासों में संयुक्त परिवार विघटन

बबीता चौधरी
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
श्रीमति दिलावरी देवी किसान कन्या डिग्री कॉलेज,
चिंगरावठी, बुलन्दशहर

संयुक्त परिवार प्रथा की भारतीय समाज में अलग पहचान है। इस प्रथा का हमारे यहां शताब्दियों तक चलते रहना प्रमाणित करता है कि इसमें त्रुटियों की अपेक्षा गुण ही अधिक थे लेकिन आधुनिक काल में शिक्षा तथा विज्ञान का प्रसार औद्योगीकरण देश की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन, नवीन दृष्टिकोण वैयक्तिकता का विकास आदि के कारण संयुक्त परिवार प्रथा का द्रुतगति से विघटन हुआ। संयुक्त परिवार के बिखर जाने से संयुक्त परिवार के अन्तर्गत कम से कम तीन पीढ़ियां एक ही छत के नीचे रहती थी किन्तु अब परिवार का अर्थ सिर्फ पति–पत्नी और एक दो बच्चे तक ही सीमित रह गया है। लेकिन स्वातन्त्रोत्तर काल में परिस्थितियाँ और भी विकट हो गयी हैं। यहां तक पति–पत्नी और बच्चों में भी पारिवारिक भावना टूटती हुई दिखाई देखती है–"अधिकांश संयुक्त परिवार केवल पारस्परिक ईर्ष्या–द्वेष और कलंक के केन्द्र बन कर रह गये हैं तथा उनमें सदस्यों की मानसिक शक्ति समाप्त हो चुकी है।"

सामाजिक संगठन का आधार परिवार रहा है। परिवार एक सामाजिक संस्था है जिसके सदस्य पारस्परिक सम्बन्धों के आधार पर परस्पर स्नेह एवं प्रीति की डोरी में बंधे रहते हैं। परिवार की सत्ता बनाए रखने के लिए पारिवारिक सदस्यों में आपसी समझ तथा सौहार्दपूर्ण वातावरण की आवश्यकता होती है। जब परिस्थितियाँ इसके विपरीत हो जाती है अर्थात् जब पारस्परिक सम्बन्धों में तनाव आ जाता है तब परिवार का प्रेमपूर्ण वातावरण द्वेषपूर्ण एवं कटुतापूर्ण बन जाता है। अतः पारिवारिक विघटन का अर्थ है "पारिवारिक संगठन का टूट जाना"।

परिवार के सदस्यों के बीच जो स्नेह, प्रेम, सहयोग और सद्भाव रहता है। जिन वस्तुओं के सहारे परिवार एक इकाई के रूप में बंधा रहता है। विघटन की स्थिति में ही पारिवारिक विघटन है "विघटन की स्थिति में पारिवारिक चेतना का ह्रास हो जाता है। प्रायः बड़े पारिवारों का छोटे–छोटे परिवारों में बंट जाने की प्रक्रिया को ही पारिवारिक विघटन माना जाता है।"

पारिवारिक विघटन संगठन की विपरीत दशा है। पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव ही पारिवारिक विघटन के लिए उत्तरदायी सिद्ध होता है। आधुनिक परिवारों में तनाव ही पारिवारिक विघटन के लिए उत्तरदायी सिद्ध होता है। व्यक्तिगत दोष, बीमारी, अवैध प्रेम, लैंगिक दोष, असामाजिक व्यवहार, बुरी आदतें, मद्यपान नैतिक पतन तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी दोषों के कारण वैवाहिक सम्बन्ध टूटने के कारण पारिवारिक सम्बन्ध भी टूट जाते हैं। बेकारी कम आय तथा नारी पर अत्याचार, नारी की आत्मनिर्भरता तथा गरीबी आदि के कारण भी पारिवारिक एकता भंग होने का मूल कारण है। इस प्रकार परिवारों में किसी प्रकार की अव्यवस्था ही पारिवारिक विघटन है।

"प्राचीन परम्पराओं, जीवन–मूल्यों और विश्वासों में परिवर्तन के कारण परिवार संस्था की मूलभूत विशेषताएँ– पारस्परिक सामूहिकता संगठन सहयोग तथा सद्भाव आदि का ह्रास हुआ, परिणामतः कौटुम्बिक जीवन कलहपूर्ण, अशान्त एवं अव्यवस्थित हो गया।"

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में पारिवारिक विघटन के कारणों को बहुत गहनता से समझने का प्रयास किया गया है। रामदरश मिश्र ने अपने उपन्यासों के माध्यम से इस सामाजिक शाप का चित्रण करके अपने समाज–प्रेमी योग्यता का परिचय दिया है। रामदरश मिश्र ने बड़ी ईमानदारी के साथ अपने उपन्यासों में इस प्रवृत्ति का चित्रण 3 किया है। नारी–पुरुष के विभिन्न आयामों को तो चित्रांकित किया ही है साथ ही आर्थिक समस्या के फलस्वरूप पति–पत्नी के बीच उदित तनावों का भी यथार्थ चित्रण किया है। 'पानी की प्राचीर' उपन्यास में नीरू की नवविवाहिता पत्नी के घर आकर नीरु की टेट से रूपये निकालने शुरू कर दिये। जब नीरू ने पत्नी को रूपये निकाले हुए देखा तो टोकते हुए कहा–यह क्या कर रही हो? पत्नी उपालम्भ के स्वर में बोल रही थी–ये सारे पैसे आप पराये लोगों पर उड़ा देते हो।" नीरू ने रूक्ष स्वर में पूछा "तुम्हारा मतलब? क्या मैं लोगों के बीच पैसे बांटता फिरता हूँ।"

इस छोटी–सी बात को लेकर दोनों में झगड़ा होना शुरू हो जाता है। यही दरार उन के सम्बन्धों में कड़वाहट पैदा कर देती है। 'जल टूटता हुआ' में संयुक्त परिवार के विघटन का जीवन्त चित्रण हुआ है। तिवारीपुर के धनपाल और बनवारी सगे भाई होकर भी अलगाव करने लगे हैं। धनपाल बड़े भाई है किन्तु उनमें छोटे भाई के प्रति स्नेह का नितान्त अभाव है। बनवारी बड़े भाई के कपट को समझ नहीं पाता क्योंकि बनवारी मनमौजी व्यक्ति है। पत्नी की शिकायतें भी उसमें बड़े के न्यायी व्यक्तित्व के प्रति शंका नहीं लगा सकी थी लेकिन पुत्र राजकुमार को जब निमोनिया हो गया तो बनवारी की आखें खुल गई बड़े भाई–भाभी की भेदभाव भरी नीति ने उसमें कड़वाहट भर दी। अब तो घर में रोज–रोज क्लेश होने लगा। देवरानी जेठानी की टकराव के कारण घर नरक बन गया। पारिवारिक सम्बन्धों में अब गांठ पड़ गयी। आस–पास के पट्टीदारों के लोग मजे लेने लगे–"आखिर एक दिन तंग आकर धनपाल ने कह ही दिया, अलग हो जाओ और मरो।"

आर्थिक कारणों के अतिरिक्त स्त्रियां भी इस विघटन के लिए विशेष उत्तरदायी होती है। 'जल टूटता हुआ' में धनपाल के पुत्र बंसी और अर्जुन आर्थिक कारणों से ही अलग–अलग हो गये। इस विघटन का कारण अर्जुन की पत्नी थी। जो स्वार्थी और बड़े कड़े मिजाज की थी उसके मन में यह धारणा थी कि उसका मर्द कमाता है और घर भर खाता है इस वजह से वह सलोना से झगड़ती रहती है। बदले में सलोना भी उसका मुंहतोड़ जवाब देती है। जिस कारण घर कौआरोर मची रहती है। एक दिन बंसी घर की हालत देखकर हैरान रह गया और अपने भाई से बोला–"भाई मैंने घर का हाल देख लिया है। तुम मेरे बहुत प्यारे हो और तुम मेरा बहुत आदर करते हो लेकिन देख रहा हूँ कि तुम्हारी यह औरत ईश्वर के भी मान की नहीं है। यह घर में आग ही लगाती जायेगी। इसलिए अच्छा हो इसी के मन का पूरा किया जाए।"

परिवार में स्त्री कलह के कारण ही अलगाव उत्पन्न हो गया है। इस तथ्य की गहराई को रामदरश मिश्र जी ने बखूबी दिखाया है। 'थकी हुई सुबह' एवं 'आकाश की छत', उपन्यास में भी संयुक्त परिवार की टूटन व्यक्त है। इस टूटन के पीछे आर्थिक कारण ही प्रमुख है। 'थकी हुई सुबह' में रामधन जी की मृत्यु के पश्चात् उमा जी जब एक बेटे को पढ़ने के लिए पैसे देती है दूसरे

बेटे को फिजूल खर्च के पैसे नहीं देती तो वह घर में झगड़ा करने लगता है और माँ से कहता है–"इस सम्पत्ति में मेरा आधा हिस्सा है जितना भाई को दोगी उतना ही मैं भी लूंगा।"

इस प्रकार आकाश की छत उपन्यास में रामभइया और यश में तनाव इतना बढ़ जाता है कि एक दिन बंटवारे की नौबत आ ही गयी। इस बंटवारे का कारण यश को पढ़ाई के लिए पैसे न देना। अन्त में तंग आकर यश ने बड़े भाई से कह दिया कि मैं पिता जी के खेत बेचकर पढूँगा। अन्त में मुकदमें के द्वारा खेत बाँट दिये गए। दो हिस्से किये गये। एक हिस्सा यश को मिल गया। मकान का भी बँटवारा किया गया। उसने मकान न लेकर मकान की बगल में बना हुआ बंगला ले लिया।

'बीस बरस' उपन्यास में संयुक्त परिवार की टूटन का दर्द अंगद भाई के कथन में अभिव्यक्त हुआ है–"इस गांव में सम्पत्ति के सिलसिले में लोगों के बड़े–बड़े प्यार और सम्बन्ध टूटते देख रहा हूँ। खुद अपने घर में देख चुका हूँ जब मेरे भतीजे ने खेत बेचने चाहे थे तो कैसे मेरे दोनों सपूतों ने विरोध किया। अपने चचेरे भाई के लिए उनमें मन में बड़ा प्यार था क्योंकि वह तो अपनी नौकरी के सिलसिले में शहर में बस गया था और उसके मेरे ही सपूत लोग जोत–बोकर उसकी फसले खा रहे थे। उन खेतों का बिकना उन्हें बुरा लगना ही था सो सारा प्यार देखते–देखते चरमरा गया।

परिवार का प्यार विश्वास सब सम्पत्ति के कारण बिखर जाता है यह टूटन अंगद भाई को कही गहरे तक छू जाती है।

'दूसरा घर' उपन्यास में शंकर के परिवार में भी झगड़ा होता रहता है। शंकर के बड़े भाई हमेशा शंकर की बीबी की शिकायत करते रहते हैं। उसको भला–बुरा कहते रहते हैं तो माँ उन लोगों पर तीती हो जाती है। उसके बच्चों और बीबी की उपेक्षा होती है। शंकर की माँ के कहने के बाद भी घर में रोज लड़ाई–झगड़ा, गाली–गलौच, मारपीट होती रहती है। घर का वातावरण कलहपूर्ण हो जाता है। शंकर के बच्चों को रोज पीटा जाता है।"

इस प्रकार पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव है और यही तनाव संयुक्त परिवार के विघटन का कारण बन रहा है। संयुक्त परिवार की आधारशिला कई खण्डों में विभाजित हो गयी है। रामदरश मिश्र जी ने परिवार के इस अलगाव को अपने उपन्यासों में बड़ी सूक्ष्मता से दिखाया है कि पारिवारिक सम्बन्ध आर्द्रता पूर्ण नहीं रह गये हैं उनमें छल प्रपंच, ईष्या–द्वेष, कटुता आर्थिक निर्भरता ने परिवारों को बिखरे दिया है। यही बिखराव उनके उपन्यासों में दिखाई देता है मिश्र जी के उपन्यासों में संयुक्त परिवार के इसी तनाव को दर्शाया गया है और यही तनाव परिवारों के टूटने का मूल कारण बन रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- डॉ0 विरेन्द्र सक्सेना – काम सम्बन्धों का यथार्थ, पृ0 सं0 255
- श्री कृष्णदत्त, सामाजिक विघटन और भारत, पृष्ठ सं0 355
- डॉ0 कमला गुप्ता, हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद, पृ0 304
- डॉ0 नारायण स्वरूप शर्मा सुमित्र – साहित्य समीक्षा के सोपान, पृ0 190
- रामदरश मिश्र – पानी के प्राचीर, पृ0 74
- रामदरश मिश्र – जल टूटता हुआ, पृ0 65

- रामदरश मिश्र – जल टूटता हुआ, पृ0 66
- रामदरश मिश्र – थकी हुई सुबह, पृ0 109
- रामदरश मिश्र – आकाश की छत, पृ0 68
- रामदरश मिश्र – बीस बरस, पृ0 126
- रामदरश मिश्र – दूसरा घर, पृ0 70

Copyright © 2016, Babita Chaudhry. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.